# श्री जाम्भोजी का जीवन-दर्शन एवं पर्यावरण संरक्षण

श्री जाम्भोजी भादव बदी अष्टमी को अवतरित हुए एवं उनका निर्वाण संवत 1593 मिगसर बदी नवम् को हुआ। वे 12 वर्ष तक बालक्रीड़ा में रहे। 27 वर्ष तक गौ सेवा, गौसंवर्द्धन तथा गौरक्षा में सक्रिय रूप से कार्यरत रहे। अनेक मुगल बादशहों एवं मुस्लिम समाज के बन्धुओं को भी गौ वध न करने का संकल्प कराया। शेष जीवनपर्यन्त धर्मोपदेश, वृक्षों की रक्षा व जीवरक्षा के लिए सक्रिय रूप से कार्य किया। जीव रक्षा व हरे वृक्षों की रक्षा उनके जीवन का मुख्य कार्य रहा, जो बिश्नोई समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत व धर्म का एक अनिवार्य अंग बन गया। संवत् 1542 में कार्तिक मास में उन्होंने विधिवत् रूप से बिश्नोई समाज की स्थापना की और 29 नियमों की एक आचार संहिता बनाई जिनमें 10 वां नियम 'जीवदया पालनी' व 17वां नियम 'रुंख लीला न घावे' बिश्नोई धर्म के 29 नियमों का मुख्य अंग है।

उनका भविष्यदृष्टा ज्ञानबोध पर्यावरण प्रदूषण के खतरों के लिये सचेष्ट था। इसीलिये उन्होंने अपन जीवनकाल में मुख्य लक्ष्य रूप में जीव रक्षा व हरे वृक्षों की सुरक्षा के लिए अनिवार्यता को प्रतिपादित करते हुए पर्यावरण संरक्षण के महत्त्व को उजागर किया।

पर्यावरण संतुलन को जीवन का अनिवार्य अंग माना। श्री जाम्भोजी के 29 नियम अपने आप में एक पर्यावरण संरक्षण संहिता है। उनकी मान्यता थी कि जीव–जन्तु प्रकृति प्रदत्त उपादान, प्राकृतिक सौन्दर्य है, प्रकृति–प्रदत्त विभिन्न उपादान, मानव जीवन का सौरभ हैं, प्रकृति परिधान हमारा वैभव है, प्रकृति जीवन है, जीवन औषधि है, प्राणवायु है, मानव मात्र का आर्थिक स्रोत है, जीवन की रीढ़ है, जीवन की रक्त वाहिनी धमनियां हैं, उनका संहार मानव समाज का संहार है, आत्मघात है। हरे वृक्षों के संहार को उन्होंने हत्यातुल्य अपराध की संज्ञा दी है। ये उन्नतीस नियम इस प्रकार हैं–

1. तीस दिन सूतक रखना।
2. पांच दिन का रजस्वला रखना।
3. प्रातःकाल स्नान करना।
4. शील, संतोष व शुद्धि रखना।
5. प्रातः सायं संध्या करना।
6. साँझ आरती, विष्णु गुण गाना।
7. प्रातःकाल हवन करना।
8. पानी छानकर पीयें व वाणी शुद्ध बोलें
9. ईंधन बीनकर व दूध छानकर लें।
10. क्षमा–सहनशीलता रखें।
11. दया–नम्रभाव से रहें।
12. चोरी नहीं करनी।
13. निन्दा नहीं करनी।
14. झूठ नहीं बोलना।
15. वाद–विवाद नहीं करना।
16. अमावस्या का व्रत रखना।
17. भजन विष्णु का करना।
18. प्राणी मात्र पर दया रखना।
19. हरे वृक्ष नहीं काटना।
20. अजर को जरना।
21. अपने हाथ से रसोई पकाना।
22. थाट अमर रखना।
23. बैल को बधिया न करना।
24. अमल नहीं खाना।
25. तम्बाकू नहीं खाना व पीना।
26. भांग नहीं पीना।
27. मद्यपान नहीं करना।
28. मांस नहीं खाना।
29. नीले रंग का वस्त्र नहीं पहनना।

आज पर्यावरण संरक्षण, वन सम्पदा व वन्य प्राणियों की सुरक्षा पर हम चिन्तन करते हैं तो भक्तिकाल युगीन सन्त शिरोमणि श्री जाम्भोजी का प्रकाशमय व्यक्तित्व, कृतित्व एवं अलौकिक, साहित्य–शब्द–वाणी के व्यवहारगत अनुपम सन्देश हमारे लिए अनुकरणीय दिशा–निर्देश हैं। श्री जाम्भोजी का जीवन, साहित्य की गुणवत्ता, ज्ञान, भक्ति, पर्यावरण संरक्षण की त्रिवेणी है जो साहित्यकारों

के लिए आचार गीता हैं, भक्त जनों के लिए ब्रह्म ज्ञान के मोतीकण हैं, पर्यावरण एवं वन्य प्राणियों के ज्ञानविदों के लिए प्रेरणास्रोत हैं।

## अमृतवाणी

चिपको आन्दोलन का मूलस्रोत, प्रेरणा का उद्‌गम श्री जाम्भोजी का जीवन–दर्शन है। वन सम्पदा व वन्य प्राणियों के सामाजिक, आर्थिक महत्त्व का आंकलन श्री जाम्भोजी ने निम्न पंक्तियों में इस प्रकार है–

***'जीव न मारो, रिधी रहे हैं।***
***सब जीवन कूँ ईश्वर निहारो।।***
***लीलो रुंख न काटो कोई।***
***अष्ट सिद्धि नौ निधी खड़ी रहे घर मांहि।।***

श्री जाम्भोजी का उपर्युक्त सिद्धान्त बुद्धिजीवियों व पर्यावरण वैज्ञानिकों के लिए अमृतमय अनुकरणीय दिग्दर्शन है। यदि उन्हें व्यावहारिक जीवन में आत्मसात कर सकें तो श्री जाम्भोजी का जीव वैज्ञानिकों, पर्यावरण वैज्ञानिकों, प्रबुद्ध नागरिकों व समाज में नेताओं के लिए यह अमर सन्देश है :–

***'पहले अपने पुत्र पौत्र को मारे सौ,***
***पिछे जायरु रुंख जीव संघारो।'***

## पर्यावरण संरक्षण पर गुरु महाराज की अमृत वाणी

*''जीव दया नित राख पाप नहीं कीजिये,*
*जांटी हिरण, संहार देख सिर दीजिये।''*
*''बधिया करे जो बैल तो देख छुड़ाइये,*
*बरजत मारे जीव तांह मर जाईय।''*
*''जीव मरै जैहि काम कदै न कराइये,*
*गऊ घृत लैवे छान होम नित ही करो।''*
*''जीवां ऊपरि जोर करीजै अन्तिकाल हुयसी मारी''*
*''रे ! बिन ही गुन्है जीव क्यूँ मारौ।''*
*''जांह जांह दया न धरमू, तां तां विक्रम करमू।''*
*''पैहलूँ किरया आप कुमाइये तो ओरां नै फरमाइयै,''*
*''सुकरत करतां हरकति आवै तो ना पछतावो करियो,''*
*''दान सुपातौं बीज सुखतां इम्रत फूल फलीजै।''*
*''संसार मां उपगार ऐसा, ज्यौ घण बरसतां नीरूं,''*
*''जैह ठुठड़ियै पान न होई, तै क्यौं चाहत फूलूं।''*

16वीं शताब्दी में ही उन्होंने वृक्षों में जीवन है सिद्धांत का प्रतिपादन किया है और प्राणवान हरे वृक्षों की सुरक्षा के लिये बिश्नोई समाज के प्रत्येक स्त्री–पुरुषों की बलिदानी सेना तैयार की। परिणामस्वरूप श्री जाम्भोजी के अनुयायी सैंकड़ों स्त्री–पुरुषों ने वन्य प्राणियों व हरे वृक्षों की रक्षा करते हुए सहर्ष आत्मोत्सर्ग किया। खेजड़ी के पेड़ों की कटाई रोकने के लिये तत्कालीन महाराजा के संकल्प को निष्फल करने के लिये खेजड़ली ग्राम में 363 स्त्री–पुरुषों ने बलिदान किया। उनके खून की बून्दों से वहां की वीर भूमि के प्रत्येक रक्तकण रजतकण बन गये हैं। इसी प्रकार तिलासणी ग्राम, रामसड़ी ग्राम, पालावास ग्राम के बलिदान की कहानियां इतिहास की अनुपम धरोहर हैं। ऐसा अनूठा, बेजोड़ उदाहरण संससार के इतिहास के पन्नों में नहीं मिलेगा, जहां स्त्री–पुरुषों ने हरे वृक्षों की रक्षा व वन्य जीव प्राणियों की रक्षार्थ हंसते–हंसते वीरगति पाई हो। आज के पर्यावरण व जीव विशेषज्ञों के लिये ये उदाहरण प्रेरणादायी, हृदयस्पर्शी, मार्मिक अनुकरणीय पथ प्रदर्शक हो सकते हैं। यदि उनमें ऐसा भाव हृदय में धारण करने की प्रबल इच्छाशक्ति हो। अन्यथा सम्मेलन, पर्यावरण–प्रदूषण रोको अभियान व वृक्षारोपण कार्यक्रम कागजी आंकड़े बनकर करोड़ों रुपयों की बर्बादी का कारण बनकर रह जायेंगे। अतः हम सभी को श्री जाम्भोजी के दर्शन से प्रेरणा लेकर 'पर्यावरण संरक्षण' के कार्य में हृदयवरण से जुट जाना चाहिए।

❑❑